शोध मंथन Vol. XIV No.III July-Sep. 2023 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.870 (SJIF)

निर्धनता : भारतीय समाज की ज्वलंत समस्या

प्राप्तिः 14.08.2023
स्वीकृतः 15.09.2023

डॉ० मनोरमा राय
असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग
धर्मेन्द्र सिंह मैमोरियल कॉलिज, अटौला, मेरठ
ईमेलः *dsmcollegeatola@gamil.com*

60

सारांश

प्रायः सभी राष्ट्रों में निर्धनता व्याप्त है। विश्व स्तर पर निर्धनता को परिभाषित किया गया है परन्तु सभी का आधार जीवन निर्वाह–स्तर की कल्पना ही है। निर्धनता का अर्थ उस सामाजिक प्रक्रिया से है जिसमें समाज का एक अंग अपने जीवन की बुनियादी आश्यकताओं को पूरा करने से वंचित रहता है तथा न्यूनतम जीवन निर्वाह–स्तर पर गुजारा करता है। भारत की लगभग 68 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्र में निवास करती है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् भारत सरकार ने नियोजित आधार पर आर्थिक विकास के प्रयास किये ताकि देश की ज्वलंत आर्थिक–सामाजिक समस्याओं का प्रभावी ढंग से निराकरण किया जा सके। योजनाबद्ध आर्थिक विकास का मूल उद्देश्य सर्वांगीण विकास रहा है, जिसके अन्तर्गत राष्ट्रीय और प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि पूर्ण रोजगार एवं आर्थिक विषमताओं में कमी के लक्ष्यो को प्राप्त किया जा सकता है।

प्रस्तावना

मानव समाज के इतिहास को अगर गहरायी से देखा जाये तो ऐसा प्रतीत होता है कि यह एक विविध प्रकार की समस्याओं एवं चुनौतियों का ही इतिहास रहा है। प्रत्येक सभ्य–असभ्य, शिक्षित–अशिक्षित, विकसित–विकासशील समाज में कुछ न कुछ सामाजिक समस्यायें सदैव विद्यमान रही हैं और आज भी हैं तथा इन्हीं समस्याओं से सामाजिक विघटन की समस्यायें उत्पन्न होती हैं। किसी भी समाज में स्थायित्व एवं निरन्तरता हेतु इन समस्याओं का समाधान आवश्यक माना जाता है। भारत में अनेक प्रकार की समस्यायें विद्यमान हैं जिनके समाधान हेतु निरन्तर प्रयास किये जा रहे हैं। इन्हीं में से एक निर्धनता की समस्या है जो हमारे समाज को दीमक की भाँति खाये जा रही है। यह निर्धनता उस रात्रि के समान है जो दिन के उजाले में हमारे विकास के संसाधनों को चुरा लेती है, जिससे हम एक विकसित राष्ट्र नहीं बन पा रहे हैं और हमारी आय का अधिकतम हिस्सा देश की जनसंख्या की बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्ति में लग जाता है। भारत की समस्याओं में निर्धनता सबसे प्रमुख समस्या है। इससे सामाजिक निराशा जन्म लेती है तथा समाज में प्रायः उथल–पुथल का खतरा पैदा हो सकता है। इसलिए 'गरीबी हटाओ' आज सरकार का प्रमुख उद्देश्य बन गया है। भारत के करोड़ों लोगों के पास खाने के लिए रोटी, पहनने के लिए कपड़े तथा सिर ढकने के लिए छत नहीं है। निर्धन लोगों का जीवन स्तर अत्यन्त निम्न है तथा वे न्यूनतम जीवन–निर्वाह स्तर से भी नीचे रह रहे हैं।

धन के अभाव को हम मोटे शब्दों में निर्धनता, दरिद्रता या गरीबी कह सकते हैं। इसका तात्पर्य उस स्थिति से है जिसमें कोई व्यक्ति या व्यक्तियों का समूह अपनी न्यूनतम आवश्यकताओं

की पूर्ति करने में सक्षम नहीं रहता है। यह एक सापेक्षिक अवधारणा है इसका प्रयोग तुलनात्मक दृष्टि से किया जाता है। न्यूनतम आवश्यकताओं का पैमाना देश, काल व समाज की दृष्टि पर निर्भर करता है। जो व्यक्ति अपने व अपने परिवार की न्यूनतम आवश्यकतायें (भोजन, वस्त्र और आवास) पूरी करने तथा उनका पालन–पोषण करने में असमर्थ हो उसे हम निर्धन कह सकते हैं।

भारत में निर्धनों की पहचान के लिए योजना आयोग द्वारा जो पैमाना निर्धारित किया गया है वह भोजन में कैलोरियों की मात्रा पर निर्भर है। इसके अनुसार भारत में सरकारी तौर पर निर्धन उसे माना जाता है जो नगरीय क्षेत्रों में कम से कम 2100 कैलोरी तथा ग्रामीण क्षेत्रा में कम से कम 2400 कैलोरी अपने भोजन में लेने में असमर्थ है, जो व्यक्ति इतनी कैलोरी स्वयं व अपने आश्रितों के लिए जुटाने में समर्थ नहीं होता उसे निर्धन कहा जाता है।

निर्धनता के प्रकार

निर्धनता दो प्रकार की होती है–

(1) निरपेक्ष निर्धनता

निरपेक्ष निर्धनता से तात्पर्य उस स्तर से है जहाँ व्यक्ति अपनी आधारभूत आवश्यकताओं जैसे–रोटी, कपड़ा और मकान को पूरा करने में सक्षम नहीं हो पाता है।

(2) सापेक्ष निर्धनता

सापेक्ष निर्धनता का आकलन दो या दो से अधिक राष्ट्रों के मध्य किया जाता है। इसमें देश में रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति का आंकलन करके देश की निर्धनता का अनुमान लगाया जाता है।

भारत के राज्यों में निर्धनों की संख्या

नीति आयोग ने अपनी पहले एम0पी0आई0 रिपोर्ट में कहा है कि बिहार, झारखण्ड व उत्तर प्रदेश देश के सबसे निर्धन राज्यों में शामिल है। सूचकांक के अनुसार बिहार की 51.91 प्रतिशत आबादी गरीब है इसके बाद झारखण्ड में 46.16 प्रतिशत आबादी गरीबी रेखा के नीचे जीवन बसर कर रही है। उत्तर प्रदेश तीसरे नम्बर पर है जहाँ के 37.79 प्रतिशत लोग निर्धन हैं। मध्य प्रदेश में 36.65 प्रतिशत, मेघालय में 32.67 प्रतिशत लोग गरीब हैं। देश के जिन राज्यों में सबसे कम गरीबी है उनके केरल 0.71 प्रतिशत शीर्ष पर है इसके बाद गोवा 3.76 प्रतिशत सिक्कम 3.82 प्रतिशत, तमिलनाडू 4.89 प्रतिशत एवं पंजाब 5.50 प्रतिशत का स्थान है। जम्मू कश्मीर और लद्दाख में 12. 58 प्रतिशत और दिल्ली में 4.79 प्रतिशत लोग गरीब हैं।

भारत में निर्धनों की संख्या

संयुक्त राष्ट्र ने अपनी रिपोर्ट में कहा है कि भारत में 2012 के बाद अगले 15 सालों में गरीबी से 14.5 करोड लोग बाहर निकले हैं इस रिपोर्ट में यह भी बताया गया है कि देश में 23 करोड़ लोग गरीबी में जी रहे हैं इनमें से कुछ की हालत बेहद खराब है। संयुक्त राष्ट्र में जारी एक रिपोर्ट में कहा है कि भारत में 2005–2006 से 2019–2021 तक गरीबी उन्मूलन की दशा में ऐतिहासिक बदलाव हुआ है। भारत के लिए 2020 के जनसंख्या आंकड़ों के आधार पर दुनिया भर में सबसे ज्यादा गरीब लोग (228.9 मिलियन यानि की 22.8 करोड़) हैं।

संयुक्त राष्ट्र ने अपनी रिपोर्ट में कहा है कि भारत में गरीबी उन्मूलन में कामयाबी पायी है लेकिन अभी लगभग 23 करोड लोगों को गरीबी से बाहर निकालना चुनौतिपूर्ण आंकड़ा बना हुआ है क्योंकि 2019–21 में जब यह आंकड़े जुटाए गये थे तब से निश्चित रूप से गरीबों की संख्या बढ़ी होगी।

संयुक्त राष्ट्र की इस रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत के कुछ इलाकों में राष्ट्रीय औसत से तेज दर से गरीबी में कमी आयी है लेकिन यह इलाके पहले अपने देश में सबसे निर्धन राज्यों में थे, रिपोर्ट के अनुसार बिहार, झारखण्ड और उत्तर प्रदेश ऐसे राज्य हैं जहाँ गरीबी में तेजी से गिरावट आयी है।

रिपोर्ट के अनुसार भारत में 2005–06 से लेकर 2015–16 तक गरीबी से 275 मिलियन यानि की 275 करोड़ लोग गरीबी रेखा से बाहर आये जबकि 2015–16 से लेकर 2019–21 तक गरीबी उन्मूलन की दिशा में ऐतिहासिक बदलाव हुआ है और यहाँ निर्धनों की संख्या में 41.5 करोड़ की कमी हुई है।

भारत में निर्धनता के कारण

सम्पत्ति एवं आय का असमान वितरण, व्यापारिक मंदी तथा बेरोजगारी की अवस्था भी निर्धनता उत्पन्न करती है। व्यापार में मंदी की स्थिति में अनेक लोग दिवालिया हो जाते हैं और उनकी जमा पूँजी खर्च हो जाती है। बेरोजगारी की अवस्था में भी व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करने में असमर्थ हो जाता है। फलस्वरूप उसकी कार्य क्षमता घट जाती है। इस प्रकार निर्धनता उत्पन्न हो जाती है। भारत में निर्धनता के निम्न कारण हैं–

(1) अशिक्षा
(2) उद्योगों की कमी
(3) सामाजिक कारण
(4) प्रौद्योगिकी का निम्न स्तर
(5) श्रम की मांग व पूर्ति में असन्तुलन
(6) जनसंख्या में तीव्र वृद्धि
(7) तकनीकी प्रशिक्षण
(8) प्राकृतिक प्रकोप
(9) ग्रामीण ऋणग्रस्तता
(10) आर्थिक।

निर्धनता किसी एक विशेष कारण का परिणाम नहीं है अपितु इसके अनेक कारण हैं जैसे–

(अ) व्यक्तिगत कारण

(1) मानसिक दोष
(2) शारीरिक दोष एवं बिमारियाँ
(3) आलस्य
(4) मद्यपान

(ब) भौगोलिक कारण

(1) प्राकृतिक साधनों की कमी
(2) प्रतिकूल जलवायु और मौसम
(3) हानिकारक कीड़े
(4) प्राकृतिक विपत्तियाँ

(स) आर्थिक कारण

(1) अपर्याप्त उत्पादन
(2) कृषि का पिछड़ापन
(3) कृषि पर अत्यधिक निर्भरता
(4) उद्योग धन्धों का अभाव
(5) धन का असमान वितरण।

(द) सामाजिक कारण

(1) दोषपूर्ण शिक्षा प्रणाली
(2) धर्म
(3) सामाजिक कुप्रथाएँ
(4) संयुक्त परिवार प्रणाली
(5) जाति व्यवस्था।

(य) जनसंख्यात्मक कारण

किसी देश की निर्धनता के जनसंख्यात्मक कारण सबसे महत्वपूर्ण कारण माने जाते हैं। वास्तव में आधुनिक युग में बेकारी व निर्धनता के लिए बढ़ती हुई जनसंख्या को एक प्रमुख कारण कहा जाता है। किसी भी देश एवं समाज का उत्थान इस बात पर निर्भरता करता है कि वहाँ की जन्मदर एवं मृत्यू दर की क्या मात्रा है। भारत की विगत वर्षों में जनसंख्या में काफी वृद्धि हुई इसका मूल कारण अधिक जन्मदर है।

निर्धनता के परिणाम

निर्धनता एक अभिशाप है। इसे सभी बुराईयों का जड़ कहा जाता है अगर व्यक्ति को भरपेट खाना न मिले तो अनेक प्रकार के अनैतिक कार्य करने लगता है। इसके प्रमुख दुष्परिणाम निम्नलिखित हैं–

(1) अपराध एवं बाल अपराध।
(2) विवाह विच्छेद
(3) आत्महत्या
(4) भिक्षावृत्ति
(5) वैश्यावृत्ति
(6) व्यक्तिक विघटन।

सुझाव

(1) जनसंख्या वृद्धि पर कठोरता से रोक।
(2) शिक्षा प्रणाली को अधिक उपयुक्त बनाकर इसे रोजगार की सुविधाओं से जोड़ा जाना चाहिए।
(3) सम्पत्ति का उचित विभाजन, धन के विकेन्द्रीकरण।
(4) उत्पादन में वृद्धि से भी निर्धनता पर नियन्त्रण रखा जा सकता है।

(5) लघु तथा कुटीर उद्योंगों को प्रोत्साहन देकर ग्रामीण बेरोजगारी को इसमें लाया जा सकता है।

(6) औद्योगिकरण का विकास तथा कृषि का विकास येाजनाबद्ध रूप से करना चाहिए ताकि आर्थिक असमानतायें अधिक न बढ़ें।

(7) परिवार नियोजन को प्रोत्साहन।

(8) पर्याप्त पूँजी की व्यवस्था।

(9) प्रशासनिक सुधारों को तेजी से लागू किया जाना चाहिए ताकि भ्रष्टाचार जैसी बुराईयों पर रोक लगायी जा सके।

(10) कृषि सम्बन्धित सुधारों तथा भूमि सुधारों के लिए कठोर अधिनियम बनाये जाने चाहिए तथा इन्हें कठोरता से लागू किया जाना चाहिए।

निष्कर्ष

यह कहना पूर्णतया सत्य है कि निर्धनता एक अभिशाप है। निर्धनता के कारण किसी समाज का ढांचा चरमरा जाता है और विघटन की प्रक्रिया आरम्भ हो जाती है। निर्धनता का हमारे समाज के विकास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। निर्धनता के कारण जब व्यक्ति को भरपेट भोजन नहीं मिलता तो वह अपराध की ओर उन्मुख होता है। मूल आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए वह अपराधों की गम्भीरता को नहीं देखता जैसे–

''तन की हविश मन को गुनहगार बना देती है,
भूख इन्सान को गद्दार बना देती है।''

निर्धनता के प्रकोप से ग्रामीण हो या शहरी कोई भी अछूता नहीं है। भारत एक धनी देश है फिर भी यहाँ के लोग गरीब हैं। क्योंकि हमारी जनसंख्या जिस अनुपात से बढ़ रही है उस अनुपात से विकास के संसाधन उपलब्ध नहीं हैं।

संदर्भ

1. आहुजा, राम. (2019). सामाजिक समस्यायें. तृतीय संस्करण. रावत पब्लिकेशन. पृष्ठ **23–58.**
2. महाहन, डॉ० धर्मवीर., महाजन, डॉ० कमलेश. (2014). समाजशास्त्र. विवके प्रकाशनः ज्वाहर नगर, दिल्ली. पृष्ठ **05–09.**
3. सागर, दीप. (1990). Rural Development Policies of India : A Historical Analysis. *The Indian Journal of Public Administration*. Delhi. Vol. 36. No. 2.
4. D Fantwala, M.L. (1985). Garibi Hatao : Strategy Options Economic and Political Weekly. 16 March.
5. (2023). Hindi Library India. 13 May. 11:08 PM.
6. (2022). ''ग्रामीण निर्धनता'' भारत में निर्धनता के क्या कारण हैं निर्धनता दूर करने के उपाय. 21 अप्रैल।